जय जय भैरवि असुर भयाउनि, पसुपति-भाबिनी माया ।
सहज सुमति वर दिअ हे गोसाञुनि, अनुगति गति तुअ पाया ।।

वासर-रइनि सवासने सोभित, चरन चन्द-मनि-चूड़ा ।
कतओक दैत मारि मुहे मेरल, कतन उगिलि करु कूड़ा ।।

सामर बदन, नयन अनुरञ्जित, जलद जोग फुल कोका ।
कट-कट विकट ओठ-पुट-पाँड़रि, लिधुर-फेन उठ फोका ।।

घन घन घनन घुघुरु कटि बाजए, हन हन कर तुअ काता ।
विद्यापति कवि तुअ पद सेवक, पुत्र बिसरु जनु माता ।।

तन्त्रमे वर्जित दस महाविद्यामे भैरवी पाँचम थिकीह । एहि गीतमे वर्णित हिनक स्वरूप रूद्र भैरवीसँ मिलैत अछि:-

उद्यद् भानु समप्रभां चन्द्र चूड़ां त्रिलोचनाम् ।
नानाऽलंकार सुभगां सर्ववैरि निकृन्तनीम् ।।
वमद् रूधिर मुण्डाली कलितां रक्तवाससाम् ।
निःशूलं डमरूं खड्गं तथा खेटकमेव च ।।
मुण्डकं चाक्षमालां च शवसिंहासनस्थिताम् ।।

कहल जाइछ जे भैरवी विद्यापतिक कुलदेवता थिकीह । ई बात एहि गीतमे आयल 'गोसाञुनि' शब्दसँ ध्वनित होइछ अछि । विद्यापतिक वंशधर लोकनिक कुलदेवता अर्थात् गोसाउनि भैरवि छथिन । बिसफीमे जे विश्वेश्वरीक मन्दिर अछि से एही भैरवीक थिक । केओ अज्ञात क़वि जे 'विद्यापतिक आयु अवसान'क वर्णन कयने छथि ताहिमे कहल गेल अछि जे कवि अपन कुलदेवता विश्वेश्वरीक स्मरण कऽ महाप्रयाण कयलनि -

जय अम्बा विश्वेश्वरी, किछु ने फुरए की करी
मोर माथे धरि दिअ हाथ ।
चललहुँ सुरसरि, धन-धाम परिहरि
तोहर अभय वर साथ ।।

(देखू परमेश्वर झाक मिथिलातत्व विमर्श, मैथिली अकादमी संस्करण पृ. 114) ।

हे भगवती भैरवी विश्वेश्वरी, अहाँक जय हो । अहाँ असुर सभक लेल तँ भयानक थिकहुँ किन्तु पशुपति शिवक लेल भाबिनी (प्रेयसी-पत्नी) आ माया (मोहक रमणी) थिकहुँ । विरोधाभास अलंकार । हे गोसउनि हमर कुलदेवता, हमरा तेहन वर (आशीर्वाद) दिअऽ जाहिसँ सहज सद्बुद्धि हो । अहाँ चरणक सेवा (अनुगति) मात्र हमर अवलम्ब (गति, उपाय) अछि । अहाँक पयर तँ दिन-राति शवासन (मुरदाक पीठ) पर रहैत अछि, किन्तु अहाँक माथ पर चान मणिमय चूड़ा (मङटीका) सन शोभैत रहैत अछि । पुनः विरोधाभास; एक धरातल तँ दोसर आकाश; एक विकर्षक तँ दोसर आकर्षक । अहाँ दैत्यक संहार करैत किछुकेँ मुंहमे मिलाओल (गीड़ि गेलहुँ) तँ किछुकेँ उगिलिकेँ कुड़ुर कऽ देल । अहाँक देह श्याम वर्ण अछि आओर आँखि लाल । से लगैछ जेना मेघमे ललका कमल फुलायल हो । (अहाँ जे असुर सभकेँ चिबबैत छी ताहिसँ) विकट कट-कट ध्वनि भऽ रहल अछि । रक्त लगलासँ अहाँक दुनू ठोर पाँड़रिक फूल-सन लगैत अछि आ ओहिमे रक्तक फेनसँ फोका उठैत अछि अहाँक डाँड़मे घुघरू घन-घन ध्वनि करैत अछि तँ काता (खड्ग) हन-हन । पुनः विरोधाभास; एक शृंगार रसक तँ दोसर वीर रसक व्यंजक । विद्यापति कहैत छथि, हम अहाँक चरणक सेवक पुत्र थिकहुँ । हे माता, अहाँ हमरा बिसरू नहि ।

[२]

कनक-भूधर-शिखर-वासिनि
चन्द्रिकाचय-चारु-हासिनी
दशन-कोटि-विकासबङ्किमतुलितचन्द्रकले ।।

क्रुद्ध-सुर-रिपु-बल-निपातिनि
महिष-शुम्भ-निशुम्भ-घातिनि
भीत-भक्त-भयापनोदन-पाटव-प्रबले ।।

जय देवि दुर्गे दुरित-तारिणी
दुर्गमारि-विमर्द-कारिणि
भक्ति-नम्र सुरासुराधिप-मङ्गलायतरे ।।

गगन मण्डल गर्भगाहिनी
समरभूमिषु सिंहवाहिनि
परशु-पाश-कृपाण-सायक-शङ्खचक्रधरे ।।

अष्टभैरवि-सङ्गशालिनि
स्वकरकृत्तकपालमालिनि
दनुजशोणितपिशितवर्धित-पारणा-रभसे ॥

संसार-बन्ध-निदान-मोचनि
चन्द्र-भानु-कृशानु-लोचनि
योगिनीगणनृत्य शोभित नृत्यभूमि-रसे ॥

जगति पालन-जनन-मारण-
रूप-कार्य्य-सहस्र-कारण
हरि-विरञ्चि-महेश-शेखर-चुम्ब्यमान-पदे ॥

सकल पापकला-परिच्युति
सुकविविद्यापति-कृत-स्तुति
तोषिते शिवसिंह-भूपति-कामनाफलदे ॥

एहि गीतमे अपरिष्कृत भाषामे दुर्गादेवीक स्तुति कयल गेल अछि । सभ वाक्य सम्बोधन करबाक रूपमे अछि जे स्तोत्र साहित्यक विशेषता थिक । व्याख्यामे सम्बोधन पदकेँ वाक्य बना देल गेल अछि ।

हे दुर्गा भगवती, अहाँ सोनाक पर्वतक शिखर पर बसैत छी । अहाँक हास तेहन सुन्दर लगैछ जेना चन्द्रकिरणक राशि हो । अहाँक दाँत तेना चमकैत अछि जेना चन्द्रमाक टुकड़ा हो । अहाँ रोसायल (क्रोधित) सुररिपु (राक्षस) सभक सेनाकेँ परास्त कयनिहारि थिकहुँ । शुम्भ, निशुंभ ओ महिषासुरक संहार कयनिहारि थिकहुँ । शत्रुसँ डेरायल भक्त लोकनिक भयकेँ दूर करबामे अहाँक पटुता (कौशल) प्रबल (पूर्ण समर्थ) अछि । हे दुर्गा देवी, अहाँ पापसँ उद्धार कयनिहारि छी; दुर्दम (दुर्गम) शत्रु सभकेँ थौआ कयनिहारि छी । अहाँ भक्तिभावसँ नतमस्तक भेल देवता होथु कि राक्षस दुनूक मंगल कयनिहारि छी । अहाँ आकाशक गर्भ (बहुत भीतर) तक पहुँचैत छी (आशय अस्पष्ट); युद्ध क्षेत्रमे सिंहपर सवार भऽ लड़ैत छी । अहाँक आठो भुजामे क्रमशः परशु (फरसा), पाश (फँसरी), खड्ग, धनुष, शंख आ चक्र अछि । आठ गोट भैरवी (योगिनी) अहाँक संग विराजित रहैछ । अहाँ अपना हाथेँ काटल मुंडक माला पहिरैत छी । अहाँकेँ राक्षसक रक्त आ मांससँ पारण करब (भूखल पेट भरब) नीक लगैछ । अहाँ सांसारिक बन्धन (बेरि-बेरि जनम आ मरण)क कारणकेँ (मायाकेँ) दूर कयनिहारि थिकहुँ । चान, अग्नि आ सूर्य अहाँक तीन आँखि थिक । योगिनी सभक नाचसँ रमनगर नृत्य भूमिमे नाचब अहाँकेँ नीक लगैछ । संसारमे जन्म, पालन आ मृत्यु (सृष्टि, स्थिति आ प्रलय) एहि तीनू कार्यक जे मूल कर्त्ता थिकाह

क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु आ महेश सेहो तीनू अहाँक चरण चुम्बन करैत रहैत छथि । अहाँ सकल पाप राशिकेँ दूर कयनिहारि थिकहुँ । अहाँ कविवर विद्यापतिक स्तुतिसँ सन्तुष्ट भऽ राजा शिव सिंहक सकल मनोरथ पुरओनिहारि थिकहुँ ।

[३]

विदिता देवी विदिता हो अविरल केस सोहन्ती ।
एका एक सहस को धारिनि जनि रङ्गापुर नटी ।।
कज्जल रूप तुअ काली कहिअए, उज्ज्वल रूप तुअ बानी ।
रविमण्डल परचण्डा कहिअए, गङ्गा कहिअए पानी ।।
ब्रह्मा घर ब्रह्मानी कहिअए, हर घर कहिअए गोरी ।
नाराएन घर कमला कहिअए, के जान उतपति तोरी ।।
विद्यापति कविवर एहो गाओल जाचक जनके गऽती ।
हासिनि देइ पति गरुड़नराएन देवसिंह नरपऽती ।।

विद्यापति आद्या शक्तिकेँ सम्बोधित कऽ हुनक वर्णन करैत छथि-घन केशराशिसँ शोभायमान हे आदि शक्ति रूपा भगवती, अहाँ विदित होउ (हमरा अपन स्वरूपक दर्शन दिअऽ । (एका एक.....नटी-अर्थ अस्पष्ट) कज्जल रूप बाली अहाँ काली कहबैत छी, उज्ज्वल (श्वेत) रूपबाली सरस्वती, सूर्यमंडल सन तेजोमय रूप बाली चण्डी आओर जलमय रूपबाली गंगा । अहाँ ब्रह्माक घरमे ब्रह्माणी कहबैत छी, महादेवक घरमे गौरी आ विष्णुक घरमे लक्ष्मी । अहाँक जन्मक विषयमे केओ नहि जनैत अछि। कविवर विद्यापति एहि गीतक रचयिता थिकाह । हाँसिनी देवीक पति राजा देवसिंह गरूड़ नारायण याचकलोकनिक अवलम्ब छथि ।

[४]

जय जय भगवति भीमा भवानी । चारि वेदेँ अवतरु ब्रह्मानी ।।
हरि हर ब्रह्मा पुछइते भमे । एकओ न जान तुअ आदि मरमे ।।
भनइ विद्यापति राइ मुकुटमनि । जीबओ रूपनराएन नृप-घरनि ।।

कवि शक्तिक एक रूप भीमाक स्तुति करैत छथि । राक्षसक संहार करबाक हेतु भवानी गौरी जखन भीम (विकराल) रूप धारण कयलनि तखन ओ भीमा कहओलनि । भगवती भवानी भीमाक जय हो । यैह भवगती जखन ऋक् आदि चारि वेदक संग अवतीर्ण भेलीह तखन ब्रह्माणी कहओलनि । ब्रह्मा, विष्णु आ महेश तीनू घूमि-घूमि जकरा तकरासँ पुछैत रहलाह, मुदा एको (केओ) अहाँक उत्पत्तिक रहस्य नहि कहलकनि अर्थात् अहाँ सभक आदि (आद्या शक्ति) थिकहुँ ।

[५]

परतह पुछ मोहि बाढ़लि भवानी । कतिएक भेलि, देखए देह आनी ।।
भीखि बेआज बास मोर आब । मनमोहन जोगिआ भल गाब ।।
ए माइ [ए माइ] अजगुत लागु । सूतलि गौरि जोगिआ देखि जागु ।।
जाहि जोगिआ देखि दुरहि पड़ाइ । ताहि जोगिआ कोर गौरि खेलाइ ।।
भनइ विद्यापति मन्दाइनि सुनु । ई जोगिआ बर होएत पुनु-पुनु ।।

गौरीक माय मनाइनि (मंदाकिनी) सखी-बहिनपासँ कहैत छथि-(शिव रूपी) योगी हमरा प्रत्यह (सभ दिन) पुछैत अछि, तोहर बेटी भवानी (गौरी) पैघ भेलि ? आनिकेँ देखाबह तँ जे कतेक टा भेलि । ओ जोगिया भीख मङबाक लाथेँ नित्य हमरा आङन अबैत अछि आ उत्तम-उत्तम गीतसँ मन हरि लैत अछि । आगे माइ, बड़ अजगुत बात जे सूतलि गौरी-ओहि जोगियाक अबितहि अचानक जागि उठैत अछि । आन धीआ-पूता सभ जाहि जोगिया केँ देखि डरेँ पड़ा जाइत अछि, गौरी ओहि जोगियाक कोरमे खेलाय लगैत अछि । विद्यापति कहैत छथि, हे मनाइनि, सुनू । गौरीकेँ बेरि-बेरि (जन्म जन्मान्तर) यैह जोगिया वर होयतनि ।

[६]

अकामिक आज आएल भेखधारी ।
भीखि-भुगुति लए चललि कुमारी ।।
भिखिआ न लेइ बढ़ाबइ रिसी । बदन निहारए
बिहुँसि-बिहुँसी ।
ए उमा सखिसङ्गे निकेहि अछली ।
ओहि जोगिआ देखि मुरुछि पड़ली ।।
दुर कर गुनपन अरे भेखधारी । काँ डिठिअओंलए राजकुमारी ।।
केओ बोल देखए देहे जनु काहू । केओ बोल ओझा आनए चाहू ।।
केओ बोल जोगिआहि देहे दहु आनी ।
हुनिकिओ भए बरु जिबओ भवानी ।।
भनइ विद्यापति अभिमत सेवा । चन्दल देवि पति बैजल देवा ।।

गौरीक प्रति शिवक पूर्वरागक वर्णन । मनाइनि सखीसँ कहैत अछि-आइ एकटा भेखधारी (जोगीक भेख बना भीख माङऽ बाला) अचानक हमरा दोआरि पर आबि गेल । कुमारि गौरी भीख लऽ चललि । जोगिया भीख नहि लेलक; खाली

बिहुँसि-बिहुँसि गौरीक मुँह निहारय लागल । हमरा तामस भेल । अरे, गौरी तँ एखनहि सखी सभक संग केहन बढ़ियाँ छलि । ओहि जोगियाकेँ देखितहि बेहोस कोना भऽ गेलि । अरे जोगिया, अपन गुनपन (जोगटोन) समेटि ले । हमर राजकुमरि गौरीकेँ डीठि (नजरि) किएक लगओलेँ । केओ सखी कहलथिन, ककरहु देखय नहि दिऔ (जे गौरीकेँ रूप देखत से नजरि लगा देत) । केओ सखी कहलथिन, ओझा-गुनीकेँ बजाउ । एक गोटे कहलथिन-गौरी ओहि जोगियेकेँ दऽ दिऔक (ओ प्रगाढ़ प्रेममे पड़ि गेल अछि)। ओकरो भऽ (ओकरहुसँ विवाह कऽ) गौरी बरू जिबैत रहओ (जँ ओ पति नहि होयतैक तँ बेचारी प्राणान्त कऽ लेत) । विद्यापति कहैत छथि, यैह उचित होयत । एहि गीत रचनाक प्रेरक थिकाह चन्दल देवीक पति बैजल देव।

[७]

कञोने बर आनल तपसिआ । गोरि मुगुधि भेलि देखि रंगरसिआ ।
नयन अनल, काजर कहाँ लाओब ।
जटा गाँग-गोह, कैसे कए चुँबाओब ॥
भुत बरिआती, कतए जेमाओब । पाँच बदन, महुअक कहाँ पाओब ॥
पानि पिनाक मुसर सर [भाबए] ।
बाघछाल ओढ़न, किछु न सोहाबए ॥
भनइ विद्यापति ओ वरदायक । देथु अभय वर ओ जगनायक ॥

महादेव विवाह करय अयलाह । मनाइनि हुनका देखि विस्मय आ चिन्ता व्यक्त करैत छथि-हाय, के एहन तपसी भिखारि बरकेँ उठा अनलनि । आश्चर्य जे एहनो रङरसिआ (विचित्र लीला कयनिहार) वर केँ देखि गौरी मुग्ध भऽ गेलि अछि । आँखिमे आगि छनि, काजर कतय लगाएब ? जटामे गंगा आ गोहि छनि, चुमाओन कोना करबनि ? भूत-बेताल बरियाती छथिन; हुनका सभकेँ भोजन कतय करयबनि ? मुँह पाँच गोट छनि, तखन महुअक कोन मुँहसँ करताह ? हाथमे धनुष छनि । अठोङरक मूसरकेँ तकर तीर बुझैत छथि । ओढ़ना (दोपटा) छनि बाघक छाल, जे किछुओ शोभा नहि दैत छनि । विद्यापति कहैत छथि, ओ बर वरदायक (सभ मनोरथ पुरओनिहार) थिकाह । ओ जगदीश्वर शिव अभय वर देथु ।

[८]

अमा, कि न गमाउति गोरी ।
सकल सम्पति मञे जोहि अएलाहु, पाओल भस्म-झोरी ॥
न घर संवर, न पिठि अम्बर न मिल पैंच-उधार ।

तनय बापुर भूखे बेआकुल, कि मञे देब अहार ॥
वासुकि जिउत पवन पिउत, हर जिउब बिख खाए ।
सेवक सामि दुहु भल मिलल, हमर कञोने उपाए ॥
पेट पचकल, गाल चोकटल, पाकल भञुहेरि गोछी ।
ताहि बुढ़ा हाथ ई बिहि देलहुँ, तेँ मञे पापिनि धोछी ॥
माए न सोचल, बाप न खोजल, खोजल दैव अपने ।
बिहिक लिखल मेटि न पाबए, झाखिअ मनहि मने ॥
भन विद्यापति सुन पारबति, एहो तिहुअन देवा ।
जगत-इसर सामि तोहि मिलु, कर जोरि करु सेवा ॥

गौरी अपन सासुरक हाल सखीकेँ सुनबैत छथि-हे सखी, तोहर गौरी सासुर जा की-की ने गमओलक । सभ सुख-सुविधासँ वंचित भऽ गेलि । सासुरमे हम सभ धन सम्पत्तिक खोज-पुछारी कऽ अयलहुँ । सम्पतिमे भेटल केवल छाउरसँ भरल झोरी । घरमे ने संबल (अन्न पानि) देखल, ने पीठ (देह) झपबाक वस्त्र । कतहु पैंचो-उधार नहि भेटल । बेचारा बेटा कातिक आ गणेश भूखसँ व्याकुल रहैत अछि; ओकरा की खोअयबैक ? वासुकी साप जे पोसने छथि से तँ वसात पिबिकेँ जीबि सकैत अछि । महादेव अपने आक-धुथुर खा पेट भरि लेताह । सेवक (वासुकी) आओर मालिक (शिव) दुनूमे खूब मिलान अछि (दुनू आनन्द); मुदा हमर कोन उपाय होयत (हम की खा जीअब ?) पेट पचकल छैक, गाल चोकटल छैक आ भौंहक गोँछी (गुच्छ) सेहो धरि पाकल छैक । विधाता एहने बूढ़ बरक हाथ देलनि; तेँ हम पापिनी (दुख भोगनिहारि) धोँछि भेलहुँ । ने माय (मनाइनि) सोचलनि, ने बाप कोनो आन नीक बर खोजलनि । हमर अपने दैब (कपार) एहन बर खोजि देलक (अनकर कोन दोख) । कपारमे जे लिखल छल तकरा के मेटाओत । मनहि मन झँखैत रहैत छी । विद्यापति सान्त्वना दैत छथि, हे गौरी, सुनू । ई अहाँक बर त्रिभुवनपति (तीनू लोकक मालिक) थिकाह । अहाँक सौभाग्य जे जगदीश्वर पति भेटलाह । भक्तिभावसँ हिनक सेवा करैत रहू ।

[९]

दोला तर नबइते ससि खसि पडु, बाघ छाल गेल छिड़िआइ ।
तेहि अमिञ-रसे मृगरिपु जिबि उठ, भागे मञे अएलाहु पड़ाइ ॥
दोसरि बिधि, पड़िचाँ, चढ़ि बैसलाहे जखने दिगम्बर आइ ।
लाजक लेल गौरि नहि आबए, सखि सबे गेलि पड़ाइ ॥
माइ हे, माड़ब मञे नहि जाएबे जहाँ बस उमत जमाइ ॥

पएर धोअए खने दूध पिउल फनि, हर लागलि तंसु चोरि ।
सबे सबतहु करताल बजाबए, मधुर हासेँ हँस गोरि ।।
सासुड़ि सङ्कर-बदन उगारल आँचर छान्दल गिमपासे ।
देखि गिरि-भाने भोगि कुच चढ़लाह, आओ कि कहब उपहासे ।।
गौरि सखी मिलि ईस सीर धरि नयन आँजल मन मोहे ।
एक हाथ नयनानल डाढ़ल दोसर गिड़ल गङ्गा-गोहे ।।
भनइ विद्यापति सुनह मन्दाइनि ओ वर सहजक भोरा ।।
गोरि-सहित हर देथु अभय वर पुरत मनोरथ तोरा ।।

पड़िछनि कयनिहारि महादेवक विवाहक वर्णन सुनबैत छथि –

महादेव जखन पालकीसँ उतरय लगलाह कि मूड़ी झुकबितहि चान खसि पड़लनि । पहिरन बाघ छाल ससरिकेँ छिड़िया (पसरि) गेलनि । ओहि छाल पर अमृतक ठोप पड़ल ताहिसँ बाघ जीबि उठल । कोनहुना बाँचिकेँ हम दूर पड़यलहुँ। आब दोसर विधिक हाल सुनू । जखन दिगम्बर (नाङट) शिव पटिआपर (कन्यादानक आसनपर) बैसलाह तँ लाजक लेल गौरी लग अयबे नहि करथि, आ डरेँ सखिओ लोकनि पड़ा गेलथिन । हे आइ-माइ, मड़वा पर तँ उमत (पागल) जमाय अछि; ओतऽ हम कोना जाउ । जखन जमाय पयर धोअय लगलाह, साप दूध पीबि लेलक आ तकर चोरि महादेव पर लगाओल गेल । सभ थोपड़ी पाड़ि-पाड़ि उपहास करय लागल । गौरीक ठोरपर सेहो मुसकान आबि गेल । सासु जखन बेदी घुमयबाक हेतु महादेवक मुह उगारि (पोछि-पाछि) आँचरसँ हुनक कान्ह छेकल तँ सांप हुनक स्तनकेँ पर्वत बूझि ओहिपर चढ़ि गेल । तखन जे ठहाका उठल से की कहू । गौरी सखी सभक संग जखन बरक माथ धऽ प्रसन्नमने आँखिमे काजर करय लगलीह तँ एक हाथ तेसर आँखिक आगिमे झरकि गेलनि आ दोसर हाथमे गंगासँ बहरा गोहि हबकि लेलकनि । विद्यापति कहैत छथि, हे मनाइनि, ओ वर स्वभावतः भोला (निरंजन) छथि । गौरी-शंकर अहाँकेँ अभय वर देथु; अहाँक सभ मनोरथ पूरत ।

[१०]

प्रथमहि सङ्कर सासुर गेला । बिनु परिचय उपहास पड़ला ।।
पुछिओ न पुछलक बैसलाह जहाँ । निरधन आदर के कर कहाँ ।।
हिमगिरि-मंडप कौतुक-रसी । हेरि हसल सबे बुढ़ तपसी ।।
से सुनि गौरि रहलि सिर नाए ।
के कहत मा के तोहर जमाए ।।

साप सरीर ओ काँख बोकाने । प्रकृति औखध जग केदहु जाने ।।
भनइ विद्यापति सहज कहू । आडम्बरे आदर हो सबतहू ।।

विद्यापति कहैत छथि-महादेव विवाहक बाद पहिल बेर सासुर गेलाह । केओ चिन्हलकनि नहि । बगय बानि देखि सभ हुनक उपहास करय लागल । जतय-ततय बैसि रहलाह । निर्धन लोकक के कतय आदर करैत अछि ।

लोकसभ हिमालयक मंडप पर (हेमन्तक दरबाजा पर) जे विनोदप्रिय लोकसभ जुटल रहय से सभ ओहि बूढ़ जोगीकेँ देखि हँसय लागल । से हँसी-मजाक सुनिकेँ गौरी माथ झुका लेलनि । चिन्तामे पड़लीह जे मनाइनि केँ के कहतनि जे ई अहाँक जमाय थिकाह । देहमे साप लुबधल छनि आ काँख तर भाङक झोरा छनि । प्रकृतिक औषध केओ नहि जनैत अछि (जकर जे प्रकृति थिकैक तकरा केओ बदलि नहि सकैछ) विद्यापति कहैत छथि, यथार्थे, सभ ठाम आडम्बरहिसँ आदर भऽ सकैत छैक ।

[११]

कौतुक एक बड़ भेला । जखन महादेव वेदी गेला ।।
जटा हलु आँकुसि लाई । झिकइते सुरसरि गेलि बढ़िआई ।।
बसह हलुअ कुस खाई । लाबा देखि फनि उठल फोफाई ।।
लाबा भासल जाई । भूखल बासुकि बिछि-बिछि खाई ।।
बाघछाल भासल जाई । फनि फुफुकार बसह बिछुआई ।।
विद्यापति ईस चुमाऊ । रूपनराएन होथु चिराऊ ।।

कवि महादेवक विवाहक वर्णन करैत छथि -

महादेवक विवाहमे एकटा आओर कौतुक (रोचक घटना) भेल, जखन महादेव वेदी पर गेलाह । जटामे अँकुसी लगाओल गेल कि जटा झिका गेल आ ओहिमे छेकलि गंगाक बान्ह टूटि गेलासँ बाढ़ि आबि गेल । बसहा कुश चिबा गेल । लाबा देखितहि साप फुफकार करैत दौड़ल । लाबा बाढ़िक पानिमे भासल जाय आ भूखल वासुकि नाग ओ बीछि-बीछि खाय लागय । एम्हर बाढ़िमे बघछाला भासल जाय तँ ओम्हर सापक फुफुकार सुनि बसहा भड़कि उठय । विद्यापति कहैत छथि, (हे मनाइनि), आब महादेवक चुमाओन करू आ राजा शिवसिंह रूपनारायण चिरंजीवी होथु।

[१२]

पाहुन आएल भवानी । बाघछाल बइसक दिअ आनी ।।
बसह चढ़ल बुढ़ आबे । धुथुर गजाए भोजन हुनि भावे ।।

भसम विलेपित आङ्गे । जटा बसथि सिर सुरसरि गाङ्गे ।।
हाड़माल फनिमाल सोभे । डँबरु बजाब हर जुबतिक लोभे ।।
विद्यापति कवि भाने । ओ नहि बुढ़वा जगत-किसाने ।।

विद्यापति पार्वतीसँ कहैत छथि-हे गौरी, महादेव पाहुन भऽ आयल छथि। हिनका बघछाला बैसक आनि दिऔन । ई बूढ़ा बसहा पर चढ़ि आयल छथि आ हिनका धथूर आ गाजा भाङ्क भोजन बड़ प्रिय छनि । भस्म देहमे लगौने रहैत छथि। हिनक माथक जटांमे गंगा बसैत छथि । हिनका देहमे हाड़ आ सापक माला खूब शोभा दैत छनि । ई युवतीक लोभेँ (युवतीकेँ आकृष्ट करबाक संकेतमे) डमरू बजबैत छथि । विद्यापति कहैत छथि, ई बुढ़बा नहि थिक, ई थिकाह एहि दुनियाक किसान (जगत् स्रष्टा) ।

[१३]

पञ्चवदन हर भसमे धवला । तीनि नयन, एक बरए अनला ।।
दुखे बोलए भवानी । जगत भिखारि मिलल हम सामी ।।
बिसधर भूखन, दिग परिधाना । बिनु बिते ईसर नाम उगना ।।
भनइ विद्यापति सुनह भवानी । हर नहि निधन, जगत सामी ।।

गौरी विलाप करैत छथि, हाय हमरा जगत भरि घूमि-घूमि भीख मङनिहार स्वामी भेटल । एक के कहय पाँच-पाँच गोट मुँह । सगर देह छाउर लेपने । तीन आँखि, तेसरमे आगि धधकैत । गहनामे साप, पहिरन दिशा (देह पर वस्त्र नहि) । धन-सम्पत्ति शून्य, तैओ कहबै छथि ईश्वर (जगत भरिक मालिक) आ नाम थिकनि उग्रनाथ (तमसाह) । विद्यापति कहैत छथि, हे गौरा, सुनह ! तोहर पति महादेव निर्धन नहि, समस्त संसारक स्वामी थिकाह ।

[१४]

बान्धए, विकट जटा । तथिहु चाँदेरि फोटा ।
कत जुग सहस बएस बहि गेला ।
उमत महादेव समत न भेला ।।
मौलि मिलाए छार । सहजे न तेजए पार ।।
नाम [भल] वामदेओ । हठे न हटए केओ ।।
कवि विद्यापति गाउ । जिअओ सिवसिंह राउ ।।

कवि महादेवक बगय बानिक वर्णन करैत छथि - माथमे विकट (बेसम्हार) जटा समेटिकेँ बन्हने छथि । ताहि जटा पर चानक ठोप छनि । बयस अनेक हजार

युग बीति गेलनि । एतेक बयस भेलहु पर ओ उमते (पागले) रहलाह । समत (स्वस्थ चित्त) नहि भेलाह (बतहपनी नहि हटलनि) । माथ पर छाउर लेपने छथि । अपन स्वभाव तेजि (बदलि) नहि सकैत छथि । ठीके हिनक नाम वामदेव (विपरीत कारी) पड़ल छनि । केओ हिनका (उबानि चालिसँ) रोकि नहि सकैत अछि । कवि विद्यापति हिनक गुण गबैत छथि । राजा शिवसिंह जीवथु ।

[१५]

विकट जटाचय, किछु न लोकभय हे, उर फनिपति, दिग वास ।
कञोने पथ भेटताह हे, आगे माइ जाइत उमत हमार ।।
त्रिपुर दहन करु छाले छाल भरु हे, बसह चढ़ल बर बूढ़ ।
तीनि नयन हर, एक अनल बर हे, सिर सुरसरि जलधार ।।
भनइ विद्यापति गौरि विकलमति हे, ओहि उमताक उदेस ।।

गौरी रूसिकेँ पड़ायल महादेवक खोज करैत छथि-माथमे विकट जटा छनि । ककरो डर-भय नहि छनि । गरामे साप लटकल छनि आ देह नाँगट । (एहन बगय बानि बला) हमर बौराह स्वामी, हे माइ, कोन बाटेँ जाइत भेटताह ? त्रिपुरकेँ डाहि ओकर छाउर भरि देह लेपने हमर ओ बूढ़ बर बसहापर सबार छथि । तीनटा आँखि छनि । एकमे आगि बरैत रहैत छनि आ माथ पर गंगाक धार छनि । विद्यापति कहैत छथि - ओहि उमत बताहक उदेस (खोज) मे गौरी व्याकुल छथि ।

[१६]

मोर बउरा देखल केहु कतहु जात । बसह चढ़ल, बिस भाङ्‌ग खात ।।
आँखि निड़र, मुह चुअइ लार । पथके चलत बउरा बिसम्भार ।।
बाट जाइते केहु हलब ठेलि । अब ओहि बउरा बिनु मञे अकेलि ।।
हाथ डँवरु कर लौआ साँख । जोग-जुगुति गिम भरल [लाख] ।।
अरगज चढ़ाए आठहु आङ्‌ग । सिर सुरसरि जटा बोर गाङ्‌ग ।।
भनइ विद्यापति सम्भुदेव । अवसर अवस सुधि हमर लेब ।।

गौरी रूसिकेँ पड़ायल महादेवक खोज करैत छथि-हे बाट-बटोही, केओ हमर बतहा (बौरायल स्वामी शिव) केँ कतहु जाइत देखलह अछि ? ओ बसहा चढ़ल अछि; विष आ भाङ खाइत अछि । आँखि गुड़ारल रहैत छैक । मुहसँ लेर चुबैत रहैत छैक । हमर ओ बतहा विश्वम्भर बाट धऽ चलि पड़ल ।

बाट चलैत केओ ठेलि ने दैक । आब हम ओहि बतहाक बिना एकसरि भऽ गेलि छी । ओकरा हाथमे लौका (सजमनि)क कमंडलु आ शंख छैक । गरामे अनेक

जड़ी-बूटी – यन्त्र-मन्त्र छैक । आठो अंगमे अरगज चढ़ओने अछि । माथ पर गंगा छथिन आ जटा गंगाक जलसँ भीजल छैक । विद्यापति कहैत छथि, हे महादेव अवसर (संकट) अयला पर हमर सुधि लेब ।

[१७]

रुसलि भवानी न मानए बोध । आज खमहु गौरि मोर अनुरोध ।
जत किछु मङ्गलह, अछए भण्डार । पहिलहि देब गिम-फनिमनि-हार ॥
भुखलों भाङ्ग देबओ बिख सानि । चढ़अक बसहा देबहु पलानि ॥
भनइ विद्यापति पुनु-पुनु सेव । चन्दल देवि पति बैजल देव ॥

महादेव रूसलि गौरीकेँ बौंसैत छथि-गौरी रूसलि छथि । महादेव बौंसैत छथिन, मुदा ओ प्रसन्न नहि होइत छथिन । कहैत छथिन, हे गौरी, हम नेहोरा करैत छी, आइ हमर अपराध क्षमा करू । अहाँ जे किछु माङब से सभटा हमरा भंडारमे अछि । जँ गहना चाही तँ सापक मणिहार देब । भूख लागल हो तँ विषमे सानिकेँ भाङ देब ! जँ सबारी चाही बसहा पलानिकेँ (साज लगायकेँ) देब । विद्यापति बेरि-बेरि नेहोरा करैत छथि । आश्रय दाता थिकथिन चन्दल देवीक पति बैजल देव ।

[१८]

सिव हे, सेबए अएलाहु सुख लागी । बिसम नयन अनुखने बर आगी ।
बसह पराएल आगे । पैसि पताल रहल गए नागे ॥
ससि उड़ि चलल अकासे । गौरि चललि गिरिराजक पासे ।
उचित बोलए नहि जाई । उमत बुझाओब कओने उपाई ।
भनइ विद्यापति दासे । गौरी सङ्कर पुराबथु आसे ।

हे महादेव, सेवा करय अयलहुँ एहि आशासँ जे सुख होयत किन्तु स्थिति विचित्र भऽ गेल । अहाँक तेसर आँखिमे लगातार आगि धधकैत रहल । से देखि बसहा आगाँ-आगाँ पड़ायल । साप डरे पताल पैसि गेल । चन्द्रमा उड़िकेँ अकास चढ़ि गेल । गौरी अपन पिताक लग नैहर चलि गेलीह । उचित कथा बाजब कोना । बताह केँ बुझयबाक कोनो उपाय नहि । विद्यापति कहैत छथि, एहि दासक आशा-मनोरथ महादेव पुराबथु ।

[१९]

पञ्चानन पुरमथन भयङ्कर, सङ्कर नाम कओने धरिआ ।
तीनि नयन, बर एक हुतासन, न जान कओने कुल अवतरिआ ।

माए न बाप, साप सङ्गे खेलए, मेलए भसम दिगन्त भरी ।
मनमथ मारि नारि आलिङ्गए, उमत बुझाओब कओन परी ।।
पाबनि गाँग मथा जदि थोबहि गोबहि काञि जटा बिघनी ।
संसय तोड़ि जे गोरि बुझाबए इथि अनुचित अनुचित अपनी ।।
भनइ विद्यापति सुनह मन्दाइनि केओ ने बुझाओत जगत गुरू ।
राजा सिवसिंह रूपनराएन सकल जाचक-जन-कलपतरू ।।

मनाइनि महादेवकेँ दूसैत छथि-जानिका पाँच टा मुँह, जे त्रिपुरकेँ डाहि-जारि देल एहन भयानक लोकक नाम शङ्कर (कल्याणकारी) के रखलक ? आँखि तीन गोट ताहूमे तेसरमे आगि धधकैत । जानि नहि कोन कुलमे जन्म भेलनि । ने माइक ठेकान, ने बापक । खेलाइत छथि सांप सभक संग । सगर देहमे छाउर लेपने छथि । एम्हर कामदेवकेँ (यौन वासनाकेँ) मारलनि आ तैयो ओम्हर नारीकेँ (आधा देहमे) सटओने छथि (अर्धनारीश्वर छथि) । एहि बतहाकेँ केओ कोना बुझाओत ? जँ (पतित) पावनी गंगाकेँ माथपर रखने छथि तँ घनगर जटामे हुनका नुकओने किएक छथि ? गौरी एहि सभ संशय मे पड़लि अछि । एहि संशयक के समाधान करत जे की उचित, की अनुचित । विद्यापति कहैत छथि, हे मानइनि, सुनह, जे शिव जगतक गुरु थिकाह तनिका आन के उपदेश देत । राजा शिवसिंह रूपनारायण सकल याचक सभक हेतु कल्पवृक्षक समान थिकाह ।

[२०]

कतहु श्मश्रुधर, कतहु पयोधर, भल वर मिलल सुंसोभे ।
अधँग धइलि नारि, न गुनलि निअ गारि, गरुअ गौरि-गुन लोभे ।।
आलो शिब शम्भू, तुमी शिव शम्भू, तुमी जो बधलो पचबाने ।।
गाँग लागि गिरजाक मनौलहे कके देवि बोलह मन्दा ।
चरन नामित फनि, मनिमय भूखन धरख खिआएल चन्दा ।।
भनइ विद्यापति सुनह त्रिलोचन पय-पङ्कज मोरि सेवा ।
चन्दल देइ पति बैदनाथ गति नीलकण्ड हर देवा ।।

कवि अर्धनारीश्वर रूपधारी शिवक वर्णन करैत छथि-कतहु (देहक आधा भागमे श्मश्रुवर (उत्तम मोछ) तँ कतहु पयोधर (स्तन) । वर ओ कन्याक मिलन सुन्दर अछि । आधा अंगमे नारीकेँ धारण कयल; एहिमे अपन अप्रतिष्ठा नहि मानल (नारीकेँ समान प्रतिष्ठा देल) किएक तँ गौरीक गुण-गरिमापर लोभा गेलाह । हे शिव, हे शम्भु, अहाँ कामदेव केँ मारल (तैयो नारीक आदर कयल) । गंगाकेँ माथ

चढ़ाओल । ताहिसँ ईर्ष्यावश गौरी रूसलीह तँ हुनकहु बौँसि लेलहुँ, कहलियनि, हे गौरी, तोँ एकरा (गंगाकेँ माथ चढ़ा राखब केँ, नारीक सम्मान करबकेँ) अधलाह किएक बुझैत छल । पयर पर साप लोटैत छनि । मणिमय भूषण (मणिधर नागक गहना) क रगड़ासँ चानक आधा भाग खिया गेल अछि । विद्यापति कहैत छथि, हे शिव, सुनू, अहाँक चरण कमलमे हमर प्रणाम । विद्यापति कहैत छथि, चन्दल देवीक पति बैजल देवकेँ नीलकण्ठ महादेव शरण देथु ।

[२१]

कतन झोरी सिन्दूरेँ भरलि, भसमे भरु बोकान ।
बसह, केहरि, मजूर, मूसा चारुहु पडु पलान ।।

डिमिक डिमिक डमरु बाजए, इसरे खेलए फागु ।
भसमेँ सिन्दूरेँ दुअओ खेड़ा एकहि दिवसे लागु ।।

सँझाञे सिन्दूरे भरु सरुसति लाछिहि भरलि गोरी ।
इसरे भसमे भरु नराएन पीत बसन बोरी ।।

एके तञो लागट, अओके उमत, इसर धुथुर खाए ।
अओके उमति खेड़ि खेलाबए किछ न बोलहि जाए ।।

गरुड़वाहन देव नराएन बसह चढ़ महेस ।
कवि विद्यापति कौतुक गाओल सङ्गहि फिरथि देस ।

फागुनक पूर्णिमा दिन रंगक खेल होइत अछि जे सिन्दूर क्रीड़ा (अबीरक खेल) कहबैत अछि । तकरा परात पड़ीब दिन भस्मक्रीड़ा (धुरखेल) होइत अछि । विद्यापति एहि दुनू क्रीड़ाक वर्णन करैत छथि-अनेक झोरीमे सिन्दूर भरल अछि । अनेक बोरामे छाउर भरल अछि । बसहा (शिवक वाहन), सिंह (दुर्गाक वाहन), मयूर (कार्तिक वाहन) आओर मूस (गणेशक वाहन) एहि चारूपर पलान (जिन) चढ़ाओल गेल । शिवक डमरू डिमिडम बजैछ । शिव फागु खेलाइत छथि । भस्मक्रीड़ा आ सिन्दूर क्रीड़ा दुनू दिनक खेल एकहि दिन भऽ रहल अछि । सन्ध्या देवी सरस्वतीकेँ सन्दूरसँ तोपि देलनि आ गौरी लक्ष्मीकेँ । महादेव विष्णुकेँ भस्मसँ तोपि देलनि तँ हुनक पीअर बसन भस्मसँ बोरा गेल । महादेव एक तँ नाङट आ ताहि पर धथूर खा मातल छथि । ताहूपर मातलि गौरी खेल खेलबैत छनि । तखन कहल की जाय । विष्णु गरूड़ पर चढ़ल छथि आ शिव बसहा पर । विद्यापति एहि कौतुकक वर्णन कयलनि । विष्णु ओ शिव दुनू अपन-अपन पत्नीक संग टहल लगा रहल छथि ।

[२२]

बेरि-बेरि अरे सिव मञे तोहि बोलञो,
किरिसि करिअ मन लाए ।
बिनु सरमे रहिअ, भिखिआ पए, माँगिअ, गुन गौरव दुर जाए ।
निरधन जन बोलि सबे उपहासए, नहि आदर अनुकम्पा ।
तोहेँ सिव पओलह आक धुथुर फुल, हरि पाओल फुल चम्पा ॥
खटङ काटि हर, हरबा बँधाबह, तिसुल तोड़िअ करु फारे ।
बसहा धुरन्धर लए हर जोतिअ, पाटिल सुरसरि धारे ॥
भनइ विद्यापति सुनह महेसर, ई जानि कएल तुअ सेवा ।
एतए जे बरु होअ से बरु होअओ, ओतए सरन मोहि देवा ॥

पार्वती महादेवकेँ उपदेश दैत छथि-हे शिव, हम अहाँकेँ बारंबार कहैत रहलहुँ अछि जे मन लगा खेती करू । परिश्रम सँ देह छिपैत, भीख माङि-माङि पेट पोसैत रहब तँ सभ गुण-गौरव चौपटे भऽ जायत । निरधन कहि-कहि सभ उपहास करैत छथि । कतहु आदर आ अनुकम्पा नहि पबैत छी । एही चालिक कारणेँ अहाँ (समुद्रमंथन भेलापर) आक-धुथूर (विष) पओलहुँ आ विष्णु पारिजात वृक्ष पओलनि । सटङ (एक हथियार) काटिकेँ हर बनबाउ, आ त्रिशूल तोड़िकेँ फार बनबाउ । बसहाकेँ हरमे जोतू आ जटाक गंगा-जलसँ खेत पटाउ । विद्यापति कहैत छथि, हे महादेव, सुनू । अहाँक आराधना एहि आशासँ कयल जे एतय जे होअय से होअओ, ओतय (मृत्युक बाद, परलोकमे) शरण देब ।

[२३]

मङ्गल बिलहिअ सिन्दुर पिठारे ।
[तोहेँ सोम्पलह साजी भरि छारे] ॥
चलह चलह हर पलटि दिगम्बर ।
हमर गोसाञुनि जोग न तोहेँ वर ॥
तोरहु चाहि गुरु गौरवे गोरी । कि करब तप जयमाली तोरी ।
नयने निहारब सँभरम लागी । हिमगिरि धीअ सहब कैसे आगी ।
भाल बरइ नयनानल - रासी । झरकत मउल डाढ़लि पटवासी ।
बड़ सुखे सासु चुमाओल मथा । ओहो बुड़त सुरसरि के सथा ।
करब सखीजने केलि अलापे । बिलग होइति फुफुआएत सापे ।
विद्यापति भन बूझ जुगुती । मेलि कराउबि हम सिव सकती ।

विवाहमे वर-पक्ष आ कन्यापक्षक बीच हास उपहासक प्रचलित प्रथाक अनुसार कन्या पक्षक एक ललना शिवक उपहास करैत छथि-मंगलक अवसर पर सिन्दूर-पिठार बिलहल जाइत अछि । अओ शिवजी, अहाँ तँ केवल भरि साजी छाउर सँठलहुँ । जाउ, हे दिगम्बर कुमारे अपन घर घुरि जाउ । अहाँ हमर धिआक अनुरूप वर नहि छी । हमर गौरीक परतर अहाँ नहि कऽ सकैत छी । गौरी अहाँसँ अधिक गुण आ गौरवबाली अछि । ओ अहाँक तप आ जपमाला लऽ की करत ? आँखि कनेक सम्हारिकेँ ताकब । गौरी हिमालयक बेटी थिक, सदा शीतल रहनिहारि । ओ अहाँक आँखिक धाह नहि सहि सकत । अहाँक कपार पर आगि बरैत अछि, मौर/घुनेस झरकि जायत आ रेशमी धोती-दोपटा जरि जायत । सासु मनाइनि बड़ मनोरथसँ अहाँक चुमाओन करतीह तँ ओहो कदाचित् गंगाक धारमे भसिया जयतीह । सखी सभ जखन रसालाप करय जयतीह तँ सापक फुफकारसँ डेरा कात भऽ जइतीह । विद्यापति कहैत छथि, हमरा युक्ति बूझल अछि, हम शिव आ शक्तिक बीच मेल करा देबनि ।

[२४]

सिव सङ्कर हे, भलि अनुगति फल भेला ।
एतए सङ्गति एति, परतर कोन गति, मनोरथ मनहि रहेला ।
तोहेँ हब परसन, पाओब अमोल धन, जनम बहल एहि आसे ।
जमक सङ्ट पुनु उपेखि हलह जनु, सेबलहुँ बड़े परेआसे ।
स्रवन नयन गेल, तनु अवसन भेल, जदि तोहेँ हम परसऽने ।
कि करब तति खने हय-गय मनि धने, झखइते बेआकुल मऽने ।
इन्द, चान्द, गन, हरि, कमलासन सबे परिहरि हमे देवा ।
भगतबछल प्रभु बान महेसर, ई जानि कइलि तुअ सेवा ।
विद्यापति भन, पुरह हमर मन, छाड़ओ जमक तरासे ।
हरह हमर दुख, तथिहु तोहर सुख, सब होअ तुअ परेआसे ।।

कवि शिवसँ प्रार्थना करैत अछि - हे शिवशंकर, तोहर सेवा (आराधना) करबाक फल जीवनमे नीक फल पाओल । एतय (एहि जीवनमे) तँ नीक संगति रहल । किन्तु पछाति (अगिला जन्ममे) कोन गति होयत, ताही पर मन लागल अछि। तोँ प्रसन्न होयैबह, तँ अमूल्य धन (नीक) दशा होयत एही आशापर जीवन बीतल। मुइलापर यमराजक समक्ष जे संकट उपस्थित होयत तकरा बिसरह नहि । ओहू बेरमे हमर सहायता करबह । बड़ तत्परतापूर्वक तोहर सेवा कयल । आब आँखिक जोति गेल, देह शिथिल भेल । यदि तोँ प्रसन्न होयबह तँ हाथी-घोड़ा, हीरामोती लऽ की करब (सभ व्यर्थ) । एहि धन सम्पत्तिक पाछाँ तँ मन अनेरे व्याकुल रहत । इन्द्र, चन्द्र

गणेश, विष्णु इत्यादि सभ देवताकेँ छोड़िकेँ हम केवल तोहर सेवा करैत रहलहुँ किएक तँ जनैत छलहुँ जे वाणेश्वर महादेव भक्त वत्सल छथि। विद्यापति कहैत छथि, तोँ हमर मनोरथ पुराबह जे हम यमराजक भयसँ मुक्त होइ। हमर दुखदर्द हरह, एहीमे तोरहु सुख भेटतहु (किएक तँ तोँ भक्तक सुखसँ सुखी होइत छह)। तोहर कृपासँ सभ किछु भऽ सकैत अछि।

[२५]

जटाजूट दह दिस हलु नमड़ाए। बसह चढ़ल उपगत भेल जाए।
दुरञो मन्दाइनि हलिअ पुछाए। के बरिआती, के छथि जमाए।
कण्ठे आएल छनि बासुकि राए। सेहे बरिआती, इसरे जमाए।
ऐसन ठाकुर हर, सम्पत्ति थोरि। भार आएल छनि भसमक झोरि।
विधि न करए हर, खेल पासा-सारि।
सापक सङ्गे सिव रचलि धमारि।
खिर न खाथि हर, धुकथि गजाए।
एहन उमत कञोने जोहल जमाए।
भइन विद्यापति एहो रस भान।
ओ नहि उमता जगत-किसान।

कवि शिवक विवाहक वर्णन करैत छथि-दसो दिस जटा नमड़ओने बसहा चढ़ि विवाह करय जूमि गेलाह। मनाइनि दूरहिसँ देखि पूछि बैसलीह, के जमाय (बर) थिकाह आ' के बरिआती ? उत्तर भेटलनि, ईश्वर (महादेव) थिकाह आ हुनक कंठमे लेपटा आयल वासुकिनाग थिकाह बरिआती। वर तँ एहन ठाकुर (श्रेष्ठ), मुदा भारमे आयल छनि केवल छाउर भरल झोरा। अरे बर तँ विधि नहि कए पासा-सारि (जूआ) खेलाय लगैत छथि आ सापक संग हुड़दंग करय लगैत छथि। जानि नहि, एहन बाउर-बताह जमाय के जोहि अनलनि। विद्यापति कहैत छथि, ओ शिव उमता (बतहा) नहि, जगत-स्रष्टा परमेश्वर थिकाह।

[२६]

जखने सङ्करे गौरि करे धरि आनलि मण्डप माझ।
सरद सम्पुन ससधर जनि उगल समय साँझ।
चौदह भुवन सिव सोहाञोन गौरी राजकुमारि।

हेरि-हरखित भेलि मन्दाइनि आएल जानि जभारि ।।
हेमन्त सरिर पुलके पूरल, सफल [कामना] मोरि ।
हरि विरञ्चि दुहु जन बैसल हरकेँ देहन्हि गोरि ।।
नारद तुम्बुरु मङ्गल गाबथि आओर कतन नारि ।
कौतुके कोबर कौसले कामिनि सबे सब देअ गारि ।।
भन विद्यापति गौरि-परिनय कौतुक कहि न जाए ।
साप फुफकारे नारि पड़ाइलि बसन ठामे नड़ाए ।।

कवि शिव पार्वतीक विवाहक वर्णन करैत छथि - जखन महादेव गौरीकेँ हाथ धऽ मड़बापर अनलनि तखन मानू साँझहि पूर्णचन्द्र उदित भेल (गौरीक मुह चान जकाँ चमकि उठल) । शिव चौदहो भुवनमे सभसँ बढ़ि सुन्दर छथि आ गौरी तँ ओहने सुन्दरि राजकुमारी छथि । वर-कन्या दुनूकेँ देखि मनाइनि केँ हर्ष भेलनि, जेना इन्द्र शचीसँ विवाह करय आयल होथि । कन्याक पिता हेमन्तक सगर शरीर हर्षें रोमांचित भऽ उठल । ब्रह्मा आ विष्णु दुनू बैसल छथिन । दुनूक समक्ष हेमन्त महादेवकेँ कन्या सोँपि देलनि । ऋषि नारद आ तुम्बुरू मंगलपाठ कयलनि आओर नारी लोकनि मंगल गीत गाओल । कोबरमे कौतुक चलल । कामिनी लोकनि कौशलसँ (व्यंग्य वचनसँ) एक दोसरा केँ गारि देलनि । विद्यापति कहैत छथि, शिव-पार्वतीक विवाहमे जे कौतुक (आमोद-प्रमोद) भेल तकर वर्णन नहि हो । (सभसँ पैघ कौतुक तखन भेल जखन) सापक फुफुकारक डरेँ महिला लोकनि तेना घबराकेँ पड़यलीह जे साड़ी ठामहि ससरि खसलनि ।

[२७]

हमसञो रुसल महेसे । गौरि विकल मन करथि उदेसे ।
पुछिअ पथुक जन तोही । एक पथ देखल केहु बूढ़ बटोही ।
आङ्ग विभूति अनूपे । कतेक कहब हुनि जोगिक सरूपे ।
विद्यापति भन ताही । हर लए गौरी भेलि बताही ।

कवि महादेवक रूसबाक वर्णन करैत छथि - (महादेव रूसिकेँ कतहु चलि देलनि) गौरीक मन विकल भऽ गेलनि । ओ शिवकेँ खोजय लगलीह-'महादेव हमरासँ रूसि कतहु पड़ा गेलाह । हे भैया बाटबटोही सभ, तोरा पुछैत छिअहु, की केओ एहि बाटे जाइत एकटा बूढ़ बटोही केँ देखलह ? ओ देहमे अद्भुत भस्म लेपने अछि । ओहि जोगियाक वर्णन कतेक कहबहु । विद्यापति कहैत छथि, ओहि महादेव लेल गौरी बताहि (बाउरि) भऽ गेलि छथि ।

ए मा कहहु, मञो पूछञो तोही ।
आहि तपोवने तापसि भेटल, (फूल) तोड़ि देल मोही ।
आँजुर भरि कुसुम तोड़ल जे जत अछल ताहाँ ।
तीनि नयने मोहि निहारए बैसि रहलिहुँ जाहाँ ।
गरा गरल, नयन अनल, सिर सोभइन्ह ससी ।
डिमिक-डिमिक डमरु बजाबए, एहे आएल तपसी ।
सिर सुरसरि भसम कपाल, हाथ कमण्डलु गोटा ।
आएल बसह चढ़ि दिगम्बर कएले विभूति फोटा ।
भन विद्यापति सामिक निन्दा न कर गोरी माता ।
तोहर सामि जगत-ईसर भुगुति-मुकुति-दाता ।

कवि मायक संग गौरीक आलाप द्वारा शिव-पार्वतीक पूर्वरागक वर्णन करैत छथि-गौरी माय मनाइनि सँ कहैत छथि, माय, हम अहाँकेँ पुछैत छी (ओ के छल) । ओ हमरा ओहि तपोवनमे भेटल । फूल तोड़िकेँ (आबेससँ) हमरा देलक । (ओकर सहायतासँ) ओतय जतेक जे फूल-छल, भरि-भरि आंजुर तोड़ल । तखन हम कात जा बैसलहुँ तँ ओ तीन आँखिएँ हमरा निहारय लागल । ओकरा कंठमे विष छलैक, आँखिमे आगि आ माथपर चान । तपसी डिमडिम डमरू बजबैत एही दिस आयल । चानि पर गंगा आ कपार मे भस्म लेपल छलैक । हाथमे एकटा कमंडलु छलैक । नङटे देहेँ, विभूतिक ठोप कयने बसहा पर चढ़ि आयल छल । (के छल ओ ?) विद्यापति कहैत छथि, हे माता गौरी, अहाँ पतिक निन्दा नहि करू । अहाँक पति एहि जन्मने भोग आ परजन्ममे मोक्ष दुनू देनिहार जगदीश्वर थिकाह ।

[२९]

उमता न तेजए आपनि बानि । सासुर बसि कत करए उबानि
गङगाजले सीञ्चलि रङगभूमि । पिछरि खसलि गौरा घूमि-घूमि ।
अवलम्बल गोरि तोरित जाए । करकङकन-फनि उठल फँफाए ।
सबे सबतहु बोल (बउरा) जमाए । बसह चढ़ल हर रूसल जाए ।
जमाइक परिहन बाघछाल । चरम घाघर बाज सिर मुण्डमाल ।
भनइ विद्यापति सिवक विलास । गौरि सहित हर पूरथु आस ।

कवि सासुरमे महादेवक अटपट चालिक वर्णन करैत छथि- मातल (भाङखाय) महादेव अपन बानि (अटपट चालि) कतहु नहि छोड़ैत छथि । सासुरमे रहैत बहुतो

अटपट काज करैत छथि । रंगभूमि (विवाह-मंडप) कें गंगा जलसँ भिजा देलनि । गौरी घुरूमि-घुरूमिकें पिछड़ि खसलीह । महादेव झट दऽ जा गौरीकें सम्हारलनि कि महादेवक हाथमे कंगना बनल साप फुफुआ उठल । सभ सभठाम बाजय लागल; जमाय तँ बौराह छथि । से सुनि महादेव बसहा पर चढ़ि रुसिकें विदा भऽ गेलाह । पहिरन छल बाघक छाल । पयरमे रहनि घुंघुरू आ गरामे मुंडमाल । विद्यापति शिवक लीलाक वर्णन कयलनि । गौरी सहित महादेव मनोरथ पुराबथु ।

[३०]

बुढ़हु बएस हर बेसन न छड़ले, की फल बसह धबाइ ।
भाग भेल सिव, चोट न लगले, के जान की होइत आइ ।
बसह पड़ाएल, के जान कतए गेल, हाड़-माल की भेल ।
फुटि गेल डमरू, भसम छिड़िआएल, अपदे सम्पति दुर गेल ।
हमर हटल सिव तोहें नहि मानह अपना हठ बेबहारे ।
सगरो जगत सबहुकाँ सूनिअ घरनिक बोल नहि टारे ।
भनइ विद्यापति सुनह महेसर इ जानि अएलाहु तुअ पासे ।
तोहरा लग सिव विधिन बिनासब आनत कोन तरासे ।

गौरी महादेव कें 'कान्ता सम्मित' उपदेश दैत छथि-हे महादेव, अहाँ बूढ़ भऽ गेलहुँ तैओ व्यसन (कुचालि) नहि छूटल । कोन काज छल बसहाकें एना दौड़यबाक । भाग्य नीक छल जे चोट नहि लागल । जानि नहि आइ की भऽ जाइत । बसहा पड़ा गेल । के जानय, कतय गेल । हाड़क माला जे गरामे छल से की भेल ? डमरू फूटि गेल । झोरा मे भरल छाउर छिड़िया गेल । अनेरे सम्पत्ति (डमरू आदि) बेरबाद भेल । हे महादेव, अहाँ हमर कहल नहि मानैत छी, अपने जिदपर अड़ल रहैत छी । सगर संसारमे सभक मुहें सुनैत छी जे पत्नीक कहल टारल नहि जाइछ (मुदा अहाँ ?) । विद्यापति कहैत छथि, हे महादेव, सुनू । अहाँक शरणमे ई जानिकें अयलहुँ जे अहाँ लग हमर सभ विघ्न दूर होयत; तखन अनकासँ कोन डर ।

[३१]

पींसल भाङ्ग रहल एहि गती ।
कि लए मनाएब उमता जती ।
आन दिन निकहि छलाह मोर पती ।
आज बनाए देल कओने उदमती ।।
आनक नीक अपन हो छती । ठाने एक ठेसता पड़त बिपती ।।
भनइ विद्यापति सुन हे सती । इ थिकाह बाउर त्रिभुवनपती ।।

गौरी महादेवक रूसलापर चिन्ता करैत छथि-पीसल भाङ पड़ले रहि गेल। महादेव रुसिकें पड़ा गेलाह। एहि उमता जोगीकें कोना मनायब। आन दिन तँ हमर स्वामी छलाह। आइ हुनका के उदमत्ती (विमन) बना देलक से जानि नहि। ओ आनक नीक (भल) करबामे सतत तैयार रहैत छथि आ अपन हानि करैत रहैत छथि। कतहु ठेस लगतनि तँ हम विपत्तिमे पड़ब। विद्यापति कहैत छथि, हे सती गौरी, सुनू। ई अहाँक ई बाउर-बकलेल तीनू जगतक ईश्वर थिकाह।

[३२]

आजु नाथ एक बरत, महासुख लाबह हे।
तोहें सिव धरु नट बेस कि डमरु बजाबह हे।
तोहें गौरा कहै छह नाचए, हमे कोना नाचब हे।
चारि सोच मोहि होए कओन बिधि बाँचब हे।
अमिअ चुबिअ भुइँ खसत बघम्बरे छाएत हे।
होएत बघम्बर बाघ बसह धए खाएत हे।
सिर सओ ससरत साप दहो दिस जाएत हे।
कातिक पोसल मजूर सेहओ धए खाएब हे।
जटासओ छिलकत गाङ्ग भूमि भरि छाएत हे।
रुण्डमाल टुटि खसत, मसानी जागत हे।
तोहें गौरा जएबह पड़ाए, नाच के देखत हे।
भनइ विद्यापति गाओल गाबि सुनाओल हे।
राखल गौरि केर मान कि चारू बचाओल हे।

गौरीक संग नटराज शिवक संवाद-गौरी कहैत छथिन, हे नटराज शिव, आइ हम व्रत कयने छी। अहाँ से काज करू जाहिसँ हमरा परम सुख हो। अर्थात्, अहाँ नटराजक रूप धरू आ डमरू बजबैत नाचू। महादेव उत्तर दैत छथिन, हे गौरी, अहाँ जे नाचय कहैत छी, से हम कोना नाचब। हमरा तँ चारि गोट विघ्न सूझैत अछि। ताहिसँ बाँचब कोना। हम नाचब तँ मुहसँ अमृत वृष्टि होअय लागत, से बघम्बर पर पड़त, ताहिसँ बघम्बर जीवित भऽ बाघ भऽ जायत आ से बसहाकें खा जायत। दोसर नाचब तँ माथ पर सँ साप सभ ससरि-ससरि दहोदिस चलि पड़त आ कातिक जे मयूर पोसने छथि से ओहि साप सभकें खा जायत। मुंडमाल (कपाल माला) टूटिकें गरासँ खसि पड़त, आ (अमृत स्पर्शसँ) ओ सभ भूत-प्रेत रूपमे जागि उठत आ हे गौरी, अहाँ तकरा डरें पड़ा जायब; तखन नाच के देखत? विद्यापति कहैत छथि, महादेव चारू विघ्नकें दूर कऽ गौरीक मान बचाय लेलनि।

[३३]

उगना रे मोर कतए गेलाह । कतए गेलाह सिव किदहु भेलाह ।
भाङ्ग नहि बटुआ रुसि बैसलाह । जोहि-हेरि आनि देल हँसि उठलाह ।
जे मोर उगनाक कहत उदेस । ताहि देबओ कर-कङ्न सन्देस ।
नन्दन-वन बिच भेटल महेस । गौरि मन हरखित भेटल कलेस ।
विद्यापति भन उगनासओ काज । नहि हितकर मोर तिहुअन राज ।

कवि गौरीक मुहेँ महादेवक रुसबाक आ बौंसल जयबाक वर्णन करैत छथि-हमर उगना (उग्रनाथ शिव) जानि नहि कतय गेलाह आ की भेलाह । बटुआ मे भाङ नहि पाबि रुसिकेँ कतहु चल गेलाह । जहाँ कतहु ताकि हेरि भाङ आनि देलियनि कि प्रसन्न भऽ हँसि उठलाह । मुदा फेर कोनो बात पर रुसिकेँ कतहु चल गेलाह । जे हमरा उगनाक उदेस (पता) आर ठेकान कहत तकरा हाथक कंगना इनाम देबैक । महादेव नन्दन वनमे भेटि गेलथिन कि गौरीक दुख दूर भऽ गेलनि आ मन हर्षित भऽ गेलनि । विद्यापति कहैत छथि, हरखित मने गौरी बजलीह, हमरा केवल उगना चाही; हुनका बिना तीनू संसारक राज्यो हमरा नहि सोहायत ।

[३४]

घर-घर भरमि जनम नित, तनिकाँ केहन विवाह ।
से आब करब गौरिवर, ई हो कतए निरबाह ।
कतए भवन, कतए आँगन, बाप कतए, कतए माए ।
कतहु ठहोर नहि ठेहर, के कर एहन जमाए ।
कओन कएल एहो असोजन केओ न हिनक परिवार ।
जे कएल हिनक निबन्धन थिक थिक से पँजिआर ।
कुल-परिवार एकओ नहि, परिजन भूत-बेताल ।
देखि-देखि झूर होअए तन, के सहए हृदयक साल ।
विद्यापति कह सुन्दरि, धैरज मन अवगाह ।
जे अछि जाँहि लिखल बिहि तनिकाँ सेह पए नाह ।

मनाइनि वरकेँ देखि अपन वेदना व्यक्त करैत छथि-जे घर-घर घूमि नित्य अपन पेट पोसैत छथि तनिका विवाह की (घरनीक कोन काज) । सैह आब गौरीक वर होयताह । से कोना होयत । के कहय कतय छनि हुनक आङन घर; कतय माय-बाप छथिन । कतहु ठओर-ठेकान नहि । एहन जमाय के करत । अस्वजनपत्र (वर-कन्याक बीच वर्जनीक रक्त सम्बन्ध नहि एहि बातक प्रमाणपत्र) के लिखलक ?

हिनक परिवारमे केओ नहि छनि । जे पँजिआर हिनक निबन्धन (हथधरी) करओलक तकरा धिक्कार । कुल-परिवारक कतहु पता नहि । बन्धुवर्गमे केवल भूत-वेताल छनि। हिनका देखि-देखिकेँ देह जरैत अछि । एहन हार्दिक वेदना के सहय । विद्यापति कहैत छथि, हे मानइनि; मनमे धैर्य धरू । जकरा कपार मे विधाता कजे वर लिखने छथिन तकरा सैह वर होयतैक ।

[३५]

हम नहि आजु रहब एहि आँगन जञो बुढ होएत जमाए ।
एक तँ बैरी भेल बीधि-बिधाता, दोसर धिआकेर बाप ।
तेसर बैरी भेल नारद बाभन जे बुढ़ आनल जमाए ।
पहिलुक बाजन डामरु तोड़ब, दोसरे तोड़ब रुण्डमाल ।
बड़द हाँकि बरिआत बैलाएब, धिआ लए जाएब पड़ाए ।
धोती, लोटा, पतरा, पोथी सेहो सभी लेबन्हि छिनाए ।
जञो किछु बजता नारद बाभन दाढ़ी धए घिसिआएब ।
भनहि विद्यापति सुनु हे मनाइनि दिढ़ करु अपन गेआन ।
सुभ सुभ कए सिरि गौरि बिआहिअ गौरी-हर एक समान ।

बूढ़ बरकेँ देखि कन्याक माय मानइनि कोप प्रकट करैत छथि-जँ ई बूढ़बा हमर जमाय होयत तँ हम एहि आङनमे नहि रहब । एक तँ विधाता शत्रु भेलाह, दोसर शत्रु भेलाह कन्याक बाप हेमन्त । तेसर शत्रु भेल नारद बाभन जे ई बूढ़ जमाय उठा अनलनि । सभसँ पहिने डमरू बाजाकेँ फोड़ब; तकरा बाद रुंडमाल तोड़ब । बड़दकेँ हाँकि बरिआती केँ बैलायब आ बेटी गौरीकेँ लऽ पड़ा जायब । नारद बाभन जे पुरहित भऽ आयल छथि तनिक धोती, लोटा आ पोथी-पतरा सभटा छिनबा लेबनि । ताहिपर जँ किछु बजताह तँ दाढ़ी पकड़िकेँ घिसिअयबनि । विद्यापति कहैत छथि, हे मनाइनि कनेक सुनू । अपन ज्ञान दृढ़ करू (एना बताहि नहि होउ) । शुभ-शुभ कऽ गौरीक विवाह महादेवसँ कराउ । गौरी आ महादेव दुनूक समान छथि (महादेवे गौरीक अनुरूप वर छथि) ।

[३६]

जखन देखल हर हो गुन-निधि । पुरल मनोरथ सब विधि ।
बसह चढ़ल हर हो बुढ़ जति । कान कुण्डल, गर गजमोति ।
बैसल महादेव हर हो चौका चढ़ि । जट छिड़िआओल मौलि भरि ।
विधिकरी हर हो विधि करु । विधि न कर हर हठ धरु ।

विधि करइते हर हो घुमि खसु । ससरि खसल फनि गौरि हँसु ।
किछु नहि सखि हे हिनि कहु । पुरुब लिखल थिका मोर पहु ।

मनाइनि अपन सखीसँ कहैत छथि-हे सखी, हम जखनहि सर्वगुण सम्पन्न महादेवकेँ देखलहुँ तखनहि हमर मनोरथ पूर भऽ गेल । वृद्ध योगी महादेव बसहापर सबार भऽ अयलाह । कानमे कुंडल छनि आ गरामे गंजमुक्ताक हार । महादेव चौका चढ़ि बैसलाह । जटा सगर माथ छिड़िआयल छलनि । विधिकरी विधि कयलथिन तँ ओ विधि नहि करबाक हट करय लगलाह । वेदी घुमबाक काल ओ खसि पड़लाह । साप ससरिकेँ खसि पड़ल आ गौरी हँसय लगलीह । (गौरी बाजि उठलीह) हे सखी, महादेव केँ किछु नहि कहिऔन । इरह हमर पति थिकाह जे कपारमे पहिनहि लिखल छलाह ।

[३७]

कखन हरब दुख मोर, हे भोलानाथ ।
दुखहि जनम भेल, दुखहि जिवन गेल, सपनहु नहि सुख मोर ।
एहि भव-सागर थाह कतहु नहि, भैरव धरु करुआर ।
भन विद्यापति मोर भोलानाथ गति करब अन्त मोहि पार ।

कवि शिवसँ प्रार्थना करैत छथि-हे भोलानाथ, हमर दुख अहाँ कखन दूर करब ? दुखहिमे जन्म भेल । दुखहिमे जीवन बीतल । सपनहुमे दुखक अन्त नहि भेल । एहि संसार रूपी समुद्रमे कतहु थाह नहि पबैत छी । हे भैरव शिव, एहि समुद्रसँ हमरा पार करक लेल अहाँ करुआरि धरू । विद्यापति कहैत छथि, हे भोलानाथ, अहीं हमर अवलम्ब छी । अन्तमे अहीं हमरा एहि भवसागरसँ पार करब ।

[३८]

जोगिआ एक हमे देखल गे माई । अद्‌भुत रूप, कहल नहि जाई ।
पाँच वदन, नित नयन बिसाला । बसन बिहून, ओढ़न बधछाला ।
सिर बह गङ्ग, तिलक सोह चन्दा । देखि सरूप मेटल दुख-दन्दा ।
एहि जोगिआमे रतलि भवानी । मन आनल वर कोन गुन जानी ।
कुल नहि सिल नहि तात-महतारी ।
बएस हिनक थिक लछ जुग चारी ।
सुनु ए मन्दाइनि, विद्यापति बानी ।
एहो जोगिया थिका त्रिभुवनदानी ।

मनाइनि कहैत छथि-आगे माइ, आइ हम एकटा योगीकेँ देखलहुँ । ओकर जे अद्भुत रूप देखल से कहल नहि जाय । पाँच मुह; तीन गोट बड़का-बड़का आँखि । वस्त्रक छूति नहि । बघछाला ओढ़ना । माथ पर गंगाक धार । ललाटपर चान । एहन रूप देखतहिँ सभ दुख-दर्द बिसरि । हमर बेटी उमा एहि योगीमे अनुरक्त भऽ गेलि । जानि नहि कोन गुण जानिकेँ एकरा पसिन्द कयलक । ने कुलक ठेकान, ने माय-बापक । बएस चारि लाख युग । विद्यापति कहैत छथि, हे मनाइनि, हमर बात सुनू ई साधारण योगी नहि थिकाह । ई थिकाह तीनू भूवनक दाता (जीवन दाता) ।

[३९]

सिव हो, उतरब पार कओन विधि ।
लोढ़ब कुसुम, तोड़ब बेलपात । पुजब सदासिव गौरिक साथ ।
बसहा चढ़ल सिव फिरए मसान । भङिया जरठ बेदन नहि जान ।
जप तप नहि, नहि कएलहुँ दान । बिति गेल तिनपन करइत आन ।
भनइ विद्यापति सुनह महेस । निरधन जानि मोर हरह कलेस ।

कवि महादेवक प्रार्थना करैत छथि-हे महादेव, हम एहि भव सागरसँ उद्धार कोना पायब ? फूल लोढ़ब, बेलपात तोड़ब । गौरी-सहित महादेवक पूजा करब । महादेव बसहा पर चढ़ल श्मशानमे घुमैत छथि । ओ भङपीबा बेदरदी आनक व्यथा नहि जनैत छथि जे जप कयल, ने तप, ने दान । आन काज (भोगविलास) मे तिनपन (बाल्य, यौवन आ वार्धक्य) बीति गेल । विद्यापति कहैत छथि, हे महादेव, हमर प्रार्थना सुनू । निर्धन बूझि हमर कष्ट हरू ।

[४०]

बड़ सुखसार पाओल तुअ तीरे । छाड़इते निकट नयन बह नीरे ।
कर जोड़ि बिनमञो विमल तरङ्गे । पुन दरसन होअ पुनिमति गङ्गे ।
एक अपराध छेँओब मोर जानी । परसल माए पाए तुअ पानी ।
कि करब जब तप जोग धेआने । जनम सुफल भेल एकहि सनाने ।
भनइ विद्यापति समन्दञो तोही । अन्त काल जनु बिसरह मोही ।

जीवनक अन्तिम क्षणमे विद्यापति गंगाक स्तुति करैत छथि-हे गंगा, तोहर तटपर अपूर्व सुख पाओल । तोहरा लगसँ हटैत (प्राणत्याग करैत) आँखिसँ नोर बहय लागल अछि । हे निर्मल तरंग बाली, हम कर जोड़ि तोरा प्रणाम करैत छिअहु । हे पुण्यमयी गंगा, फेर दरसन दिहह । हम जानि-बूझिकेँ एकटा अपराध कयलहुँ: हे माता, तोहर पानिमे पायर लगाओल । जप, तप, योग ध्यान जतेक जे कयलहुँ से सभ

व्यर्थ । एक बेर तोहर जलमे डूब दितहिं जन्म सफल भऽ गेल । विद्यापति कहैत छथि, संसारसँ बिदा होयबाक काल तोरासँ प्रार्थना करैत छी जे अन्त कालमे हमरा बिसरह नहि ।

[४१]

ब्रह्म-कमण्डलु-वास-सुवासिनी सागर-नागर-गृह-बाले ।
पातक-महिष-विदारण-कारण घत करवाल वीचिमाले ।
जय गङ्गे, जय गङ्गे शरणागत-भय-भङ्गे ।
सुर-मुनि-मनुज-रचित पूजोचित कुसुम विचित्रित तीरे ।
त्रिनयन-मौलि-जटाचय-चुम्बित भूति-भुसित सित नीरे ।
हरिपद-कमल-गलित मधुसोदर पुण्य पुनित सुर लोके ।
प्रविलसदमरपुरी पद दान विधान विनाशित शोके ।
सहजदयालुतया पातकि जन नरक निवारण निपुणे ।
रुद्रसिंह नरपति वरदायक विद्यापति कवि भणितगुणे ।

विद्यापति (शिथिल संस्कृत भाषामे) गंगाक स्तुति करैत छथि-हे गंगे, अहाँक मूलवास ब्रह्माक कमण्डलु मे अछि । ओतयसँ अहाँ राजा सगरक सन्तान लोकनिक घर अयलहुँ । अहाँ पापरूपी महिषासुरकेँ मारबाक लेल हाथमे तरंगावली रूपी तरूआरि लेल । हे गंगे, अहाँक जय हो अहाँ शरणमे आयल लोकसभक भय (यमयातनाक डर) दूर करैत छी । अहाँक तट ओहि फूल सभसँ सुशोभित अछि जे देव, मुनि आ मानव अहाँक पूजामे चढ़ओलनि अछि । अहाँ त्रिलोचन शिवक माथपरक जटा जूट चुम्बित (जटामे अवस्थित) छी । अहाँक जल शिवक विभूतिसँ श्वेतवर्ण अछि । अहाँ विष्णुक चरण-कमलसँ प्रवाहित मधुक तुल्य अपन जलसँ स्वर्गलोककेँ पुनीत कयने छी । अहाँ रमणी अमरपुरीमे स्थान दए (स्वर्ग-प्राप्ति कराय) लोकक शोक (चिन्ता)केँ दूर करैत छी । अहाँ स्वभावतः दयालु होयबाक कारणेँ पापिओ सभकेँ नरक सँ बचयबामे दक्ष छी । विद्यापति अहाँक गुण गबैत छथि । अहाँ रूद्रसिंह केँ वर दिऔन । हुनक मनोरथ पुरबिऔन ।

[४२]

ससन-परस खसु अम्बर रे देखल धनि-देह ।
नव जलधर तर चमकए रे जनि बीजुरि-रेह ।।
आज देखलि धनि जाइते रे मोहि उपजल रङ्ग ।
कनक-लता जनि सञ्चर रे सहि निरअवलम्ब ।।

ता पुनु अपरुब देखल रे कुचजुग अरविन्द ।
बिगसित नहि किछु कारन रे सोझाँ मुख-चन्द ।।
विद्यापति कवि गाओल रे रस बुझ रसमन्त ।
देवसिंह नृपनागर रे हाँसिनि देवि-कान्त ।।

कृष्ण राधाक रूपलावण्य देखि उठल मनक भाव व्यक्त करैत छथि-पवनक स्पर्शसँ (हबाक झोँकमे) राधाक आँचर खसि पड़लनि, ताहिसँ हुनक देह देखल तँ लागल जेना नब मेघ (श्याम वर्ण साड़ी) केर तरमे विद्युतक रेखा (देह) चमकैत हो। आइ सुन्दरी राधाकेँ जाइत देखल तँ भान भेल जेना सोनाक लता धरतीपर बिनु कोनो सहाराक विचरण करैत हो। फेर ओहि सोनाक लतामे स्तनरूपी दूटा कमल देखल, जे बिनु कोनो कारणहि (सूर्यक अनुपस्थिति मे) सामने मुखरूपी चान रहितहुँ (राति होइतहुमे) फुलायल छल। (ज्ञातव्य जे कमल दिनमे फुलाइछ, रातिमे सँकुचैछ)। विद्यापति कवि ई गीत गाओल। एकर रस बुझनिहार थिकाह हाँसिनिदेवीक प्रियतम रसज्ञ नृपवर देवसिंह।

[४३]

कामिनि करए सनाने । हेरइत हृदय हनए पँचबाने ।
चिकुर गलए जलधारा । मुख-ससि-डरे जनि रोअए अन्धारा ।
तितल बसन तनु लागू । मुनिहुक मानस मनमथ जागू ।
कुच - जुग चारु चकेबा । निञ कुल मिलत आनि कञोने देबा ।
तेँ सङ्काञे भुजपासे । बान्धि धएल उड़ि जाएत अकासे ।
सुकवि विद्यापति गाबे । गुनमति धनि पुनमत जन पाबे ।

कवि सद्यःस्नाता नायिकाक वर्णन करैत छथि-कामिनी स्नान करैत छथि। देखितहिँ कामदेव हृदय पर प्रहार करय लगैत छथि। केशराशिसँ जलधारा गलैत (बहैत) अछि, जेना मुखचन्द्रक डरेँ अन्धकार (राहु) कनैत हो। भीजल वस्त्र देहसँ सटल छनि। से देखि ऋषिओ-मुनिक मनमे कामदेव (कामवासना) जागि उठैत छथि। दुनू स्तन मानू मनोहर चकबा-चकबीक थिक। जँ ई दुनू एतय सँ उड़ि चकबासभक अपन झुंडमे मिलि जायत तँ फेर आनि के देत-एही आशंकासँ दुनू स्तनकेँ अपन बाहुपाशमे बान्हि रखने छथि जे फेर अकासमे उड़ि ने जाय। विद्यापति कहैत छथि, पुण्यवाने पुरुष गुनमन्ति नारि पाबि सकैत छथि।

[४४]

ततहि धओल दुहु लोचन रे जेहि पथेँ गेलि वर नारि ।
आसा लुबुधल न तेजए रे कृपनक पाछु भिखारि ।।
सहजहि आनन सुन्दर रे भउँह सुरेखलि आँखि ।
पङ्कज-मधु पिबि मधुकर रे उड़ए पसारलि पाँखि ।।
आजे देखलि धुनि जाइते रे रूप रहल मन लागि ।
तेहि खन सञो गुन-गौरव रे धैरज सबे गेल भागि ।।
रूप लागि मन धओल रे कुच-कञ्चन-गिरि-सन्धि ।
तेँ अपराधेँ मनोभव रे ततहि धएल जनि बान्धि ।।
विद्यापति कवि गाबिह रे रस बुझ रसिक सुजान ।
राजा रूपनाएन रे लखिमादेवि-रमान ।।

कवि नायिकांक रूपपर आकृष्ट मनक दशाक वर्णन करैत छथि-जाहि बाटेँ सुन्दरी गेलि दुनू आँखि ताही दिस दौड़ैत अछि । जेना आशासँ लोभायल भिखारि कृपण लोकक पाछू नहि छोड़ैत अछि । ओकर सहज सुन्दर मुखमे भौंहक रेखासँ सुशोभित आँखि लगैछ जेना भ्रमर कमलक रस पीबि केँ उड़बा लेल पाँखि पसारने हो । आइ सुन्दरीकेँ जाइत देखल तँ ओकर रूप पर मन लगले रहि गेल । तखनसँ अपन गुण, गौरव आ धैर्य सभ भागि (बिला) गेल । मन ओकर रूपक पाछाँ लागल स्तनरूपी स्वर्णपर्वतक खोहमे पैसि गेल । ताहि अपराधेँ कामदेव प्रहरी मानू हमर मनकेँ ओतहि बान्हि रखलनि । विद्यापति कहैत छथि, एकर रस बुझनिहार थिकाह लखिमा देवीक पत विज्ञ रसिक राजा (शिवसिंह) रूपनारायण ।

[४५]

कि आरे नव जौवन अभिरामा ।
जत देखल तत कहहि न पारिअ छओ अनुपम एक ठामा ।।
हरि दनि इन्दु अरविन्द करिनि हेम पिक बूझल अनुमानी ।
नयन बयन परिमल गति तनु रुचि अओ अति सुललित बानी ।।
कुचजुग उपर चिकुर फुजि पसरल ता अरुझाएल हारा ।
जनि रे सुमेरु उपर मिलि उगल चान्द-बिहिन सबे तारा ।।
लोल कपोल ललित मनि-कुण्डल, अधर बिम्ब अध जाई ।
भउँह भमर नासापुट सुन्दर से देखि कीर लजाई ।।

भनइ विद्यापति से वर नागरि आन न पाबए कोई ।
कंसदलन नाराएन सुन्दर तसु रङ्गिनी पए होई ।।

कवि राधाक रूपवर्णन करैत छथि-अहा, राधाक नव यौवन कतेक सुन्दर अछि । जतेक देखल ततेक कहल नहि जा सकैत अछि । एतय छओ गोट अनुपम वस्तु एक ठाम जुटल अछि-हरिन, चान, कमल, हाथी, सोन आ कोकिल । अनुमानसँ बूझल जे ई थिक क्रमशः राधाक नयन, मुख, देहक सौरभ, गति, देहक वर्ण आ परम मधुर वचन । खोपा फूजि छातीपर पसरल अछि आ ताहिमे मोतिक हार ओझरायल अछि । से लगैछ जेना सुमेरू (स्तन) पर बिनु चन्द्रमाक (अन्हरिआ रातिमे) तारासभ (मोती) उगल हो । गालपर सुन्दर कुंडल डोलैछ । अधर (निचला ठोर) तिलकोरक फड़हुसँ अधिक सुन्दर अछि । सूगा तिलकोरक फड़पर लोभाइत तँ अछि किन्तु भौंह रूपी धनुषकेँ देखि डराइत अछि आ नाकक सुन्दरता देखि लजाइत अछि । विद्यापति कहैत छथि, एहन श्रेष्ठ नारी आन केओ नहि पाबि सकैत अछि । ई तँ कंस दलन नारायणहिक गृहिणी थिकीह ।

[४६]

लोचन चपल वदन सानन्द । नील नलिनि-दले पूजल चन्द ।
पीन पयोधर रुचि उजरी । सिरिफल फलल कनक (बलरी) ।
गुनमति (धनि) गजराज-गती । देखलि मञे जाइत वर जुवती ।
गरुअ नितम्ब उपर कुच-भार । भाँगिबा चाहए थेघिबा के पार ।
तनु रोमावलि देखि मन भेल । धनुगुन मनमथे थेघन देल ।
सम्भ्रम सकल सखीजन बारि । प्रेम बुझओलक पलटि निहारि ।
आओर चतुरपन कहहि न जाए । नयने नयन मेलि रहलि नुकाए ।
तहिखन सञो चन्दन भाब ।
(अबुझ) नयन पुनु तठमहि धाब ।

कृष्ण राधाक रूपक वर्णन करैत छथि-ओकर प्रसन्न मुखमे चंचल लोचन लगैछ जेना चानक पूजा नील कमलसँ कयल गेल हो । पुष्ट स्तनक गोर वर्ण लगैछ जेना बेलमे सोनाक मजर आयल हो । आइ हम गजगामिनी गुणवती युवती राधाकेँ जाइत देखल । भारी नितम्ब उपरसँ पड़ैत स्तनक भारसँ लगैछ जेना टूटय चाहैत हो । (चिन्ता भेल जे) के अवलम्बन (टेक) दए सकत ? परन्तु जखन देहमे रोमावली देखलिऐक तखन बूझल जे कामदेव अपन धनुषक अवलम्बन (टेक) दऽ देने छथिन । अचानक सभ सखीसँ कात जा राधा हमर आँखिमे आँखि मिला सहसा नुका रहलि

(अलक्षित भऽ गेलि) । तखनहिसँ हमरा ने चान सोहाइत अछि, ने चन्दन । विवश भेल आँखि बेर-बेर ओहीठाम दौड़ैत अछि (जतसँ ओ अलक्षित भेलि) ।

[४७]

सहज प्रसन मुख, दरस हृदय-सुख, लोचन तरल तरङ्ग ।
अकास पताल बस सेहो कैसे भेल अस चान्द सरोरुह सङ्ग ।।
विधि निरमलि वामा दोसरि लाछि समा भल तुलाएल निश्मान ।
....
कुचमण्डल-सिरि हेरि कनक-गिरि लाजे दिगन्तर गेल ।
केओ अइसन कह, सेहो न जुगुति सह अचल सचल कैसे भेल ।
माझ खीन तनु भरे भाङ्गि जाए जनु विधिँ अनुसए भेल साजि ।
नील पटोर आनि अतिसए सुदिढ़ जानि जतने सिरिजु रोमराजि ।
भन कवि विद्यापति कामरमनि रति कौतुक बुझ रसमन्त ।
सिरि सिवसिंह राउ पुरुबेँ सुकृते पउ लखिमा देवि रानि कन्त ।

कवि नायिकाक रूपक वर्णन करैत छथि-नायिकाक मुखमे सहज प्रसन्नता छैक जे देखिकेँ हृदय जुड़ाइत अछि आओर आँखिमे चंचलता छैक । आश्चर्य ! एक (चान) आकाश मे रहनिहार आ दोसर (कमल) पाताल (पोखरि)मे; तखन दुनू एकठाम कोना आयल । ब्रह्मा द्वितीय लक्ष्मीक समान एक ललनाक रचना कयल । तुलना सटीक भेल । केओ कहैत अछि जे स्तनक शोभा देखि सुमेरू लाजेँ देशान्तर चल गेल; परन्तु से युक्तिसंगत नहि; अचल सचल कोना होयत । विधाताकेँ गढ़लाक बाद चिन्ता भेलनि जे क्षीणकटि स्तनक भारसँ टूटि ने जाय, तेँ नील वर्णक रेशमी सूत आनि ओकरा खूब सकत जानिकेँ ओहिसँ कामिनीक रोमावली रचलनि । विद्यापति कहैत छथि - रसज्ञ लोकनि ई कौतुक जनैत छथि जे लखिमा देवीक पति राजा श्री शिवसिंह पूर्व जन्मक पुण्यक बलेँ कामदेवक स्त्री समान स्त्री पओलनि ।

[४८]

कुसुमबान-विलास-कानन केस सीन्दुर-रेह ।
निबिल-नीरद-[उपर] दरसए अरुन जनि निज देह ।।
आज देखु गजराज गति वर-जुवति [तिहुअन] सार ।
जनि कामदेवक विजयवल्ली बिहलि बिहि संसार ।।
सरद-ससधर-सरिस सुन्दर वदन लोचन लोल ।
विल कञ्चन कमल चढ़ि जनि खेल खञ्जन जोल ।।

अधर नवपल्लव-मनोहर दसन दामिल जोति ।
जनि निविल विद्रुमदले सुधारसेँ सींचि धरु गजमोति ।।
मत्त कोकिल बेनु बीना नाद तिहुअन भास ।
जनि मधुर हाक पसाहि आनन करए वचन विकास ।।
अमर-भूधर सम पयोधर महघ मोतिम हार ।
हेम-निर्मित-शम्भु-शेखर गङ्ग निर्मल धार ।
करभकोमल-कर-सुसोभन जङ्घ जुग आरम्भ ।
जनि मदन-मल्ल-बेआम कारने गढ़ल हाटक थम्भ ।
सुकवि एहु कण्ठहार गाओल रूप सकल सरूप ।
देवि लखिमा कन्त जानए सिरि सिबएसिंह भूप ।।

कवि नायिकाक रूपक वर्णन करैत छथि-कामदेवक विलासक उपवन रूपी केसमे सिन्दूरक रेखा लगैछ जेना घन मेघक उपर अरुणदेव अपन देह देखबैत होथि। आइ गजगामिनी त्रिभुवन सुन्दरी युवतीकेँ देखल तँ लागल जेना ब्रह्मा कामदेवक विश्वविजयक ध्वजा बनओने होथि। शरदचन्द्र सदृश आनन (चेहरा) आओर चंचल लोचन देखि लागल जेना निर्मल सोनाक कमलपर चढ़ि एक जोड़ा खंजन क्रीड़ा करैत हो। अधर नब पल्लव-सन सुन्दर छैक आ दाँत दाड़िमक दाना जकाँ चमकैत छैक, जेना ठोस मूङाक पात पर गजमुक्ता अमृतसँ सींचि बैसाओल हो। (ओकर बोल लगैछ जेना) मत्त कोकिल, वंशी आ वीणा ई तीनू ओकरा मुहपर विलास करैत हो। ओकर सुमेरू-सन स्तन परक मूल्यवान मोतिक हार लगैछ जेना स्वर्णरचित शिव (लिंग)क उपर गंगाक निर्मल धार बहैत हो। ओकर कमल सन कोमल हाथ आ दुनू जाँघ लगैछ जेना कामदेव रूपी पहलमानक कसरत हेतु सोनाक स्तम्भ बनाओल गेल हो। एहि युवतीक सकल रूपक यथार्थ वर्णन कयल सुकवि कण्ठहार। एकर रसक ज्ञाता छथि लखिमा देवीक पति राजा शिवसिंह।

[४९]

कुण्डल तिलके विराज मुख सोभित सीन्दुर बिन्दु ।
हेमलता [जनि साजु] विधि कवि रवि तारा इन्दु ।।
इन्दुवदनि धनि नयन बिसाला ।
कमलकलित जनि मधुकर-माला ।
देखलि कलावति अपरुब रमनी ।
जिनए आइलि सुरपुर गजगमनी ।

बेनी विमल बिराज तसु लस कुसुमावलि-हार ।
स्याम भुअङ्गम देखिकहु किओ काम-परहार ।।
करु परहार मदन-सर बाला । कुटिल कटाख बान कनिआरा ।
कम्बु कण्ठ पञोनाल भुज वलित पयोधर भार ।
कनक कलस रसेँ पूरि रहु सञ्चित मदन भण्डार ।
मदन-भण्डार पयोधर गोरा । जनि उलटाओल कनय कचोरा ।
स्यामा सुलोचनि सुरति रति अपुरुब भूसन-भार ।
विद्यापति कविराज कह सुफलेँ करथु अभिसार ।।
करु अभिसार मदनसर बाला । कुटिल कटाख बान कनिआरा ।

कवि नायिकाक रूपक वर्णन करैत छथि-नायिकाक मुख कुंडल, तिलक (पसाहिन) आ सिन्दूरक ठोपसँ शोभित अछि; जनु विधाता सोनाक लता (नायिकाक देह) केँ शुक्र (कुंडल), सूर्य (सिन्दूरक ठोप), तारा (पसाहिन) तथा चान (मुख) सँ सजओलनि । सुन्दरीक पैघ-पैघ आँखि लगैछ जेना कमल (मुख) पर दुनू भ्रमर बैसल हो । आइ ओहि अपूर्व कलावती रमणीकेँ देखल तँ लागल ज़ेना ओ गजगामिनी स्वर्ण जीतय आइलि हो । ओकर सुन्दर वेणी (केसक जुट्टी) मे फूलक हार शोभित अछि, से लगैछ जेना कृष्ण सर्प (वेणी)केँ देखि कामदेव फूलक बाण छोड़ने होथि । सुन्दरी काम बाण चलबैत अछि, ओकर कुटिल कटाक्ष नोकगर बाण थिक । ओकर कंठ शंखसन छैक, बाँहि कमलक डाँट-सन आ स्तन पुष्ट आओर गोल अछि; से लगैछ जेना सोनाक कटौरा कामदेवक भंडारमे उनटाकेँ राखल हो । विद्यापति कविराज कहैत छथि, अपूर्व भूषण सभसँ सुशोभित, संगममे रतिक (कामदेवक स्त्रीक) सदृश श्यामांगी ललना सफलतापूर्वक अभिसार करथु । सुन्दरी अभिसार करैत छथि, जनिक कुटिल कटाक्ष चोख मदन-सर थिक ।

[५०]

आनन लोनुञ वचन बोलए हँसि ।
अमिञ बरिस जनि सरद पुनि ससि ।।
अपरुब रूप रमनिञा ।
जाइते देखलि गजराज-गमनिञा ।।
काजरे रञ्जित धवल नयन वर ।
भमर मिलल जनि अरुन कमल दल ।।
भान भेलि मोहि माझ खीनि धनि ।।

कुचसिरिफल-भरे भाङ्गि जाइति जानि ॥
कविसेखर भन अपरुब रूप देखि ।
राए नसरद साह भजलि कमलमुखि ॥

कवि नायिकाक रूपक वर्णन करैत छथि-ओकर मुखमंडल मनोरम छैक । ओ हँसि-हँसि (मुसकिआइत) बजैत अछि, मानू पूर्णिमाक चान अमृत बरिसबैत हो । अहा, अपूर्व छल ओहि रमणीक छवि । ओहि गजगामिनीकेँ आइ हम जाइत देखल । ओकर श्वेतवर्ण आँखि काजरसँ रंजित छल, मानू लाल कमल पर भ्रमर बैसल हो । ओकर कटि ततेक पातर छलैक जे हमरा बुझायल जे बेल-सन पुष्ट स्तनक भारसँ टूटि ने जाय । कविशेखर कहैत छथि, एहने अपूर्व रूप देखि राजा नसरद साह कमल मुखीकेँ ग्रहण कयल ।

